Deg 1 (Hons)
P-I (Hist)

गजनवी के आक्रमण के राजनीतिक कारण

अर्थ संग्रह के साथ-साथ आक्रमण का उद्देश्य राजनीतिक भी था। भारत के उत्तर पश्चिम में हिन्दूशाही राज्य था। हिन्दूशाही शासक जयपाल ने गजनी पर तीन बार आक्रमण किया था। हिन्दूशाही राज्य की सीमा गजनी को छूती थी। जो गजनवी की ओर से खटक रहा था। अतः महमूद ने पड़ोस के शक्तिशाली हिन्दूशाही राज्य की स्वतंत्रता को नष्ट करने के लिए भारत पर आक्रमण की नीति अपनायी और उनकी शक्ति को समाप्त कर उसने धन के लोभ में एक लुटेरे की तरह भारत के अन्य नगरों पर भी आक्रमण किया। महमूद एक कुशल सैनिक, योग्य सेनानायक एवं महत्वाकांक्षी था। वह यश प्राप्त करना चाहता था।

महमूद के आक्रमण के प्रमुख उद्देश्य - महमूद गजनवी भारत को सोने की चिड़िया समझकर उस पर बाज की तरह झपट्टा मारकर और द्रुतगति से पुनः लौट जाता था। सर्व प्रथम उसने 1000 ई० में जयपाल के राज्य के कुछ सीमान्त प्रदेशों के नगरों और किलों को जीत लिया और पुनः गजनी लौट गया। विजय के बाद गजनवी ने जयपाल की राजधानी वैहन्द पर आक्रमण कर अपार धन लूट लिया और लौट गया। जयपाल पराजय से अपमानित होकर स्वयं चिता में भस्मीभूत हो गया। महमूद मुल्तान को जीतना चाहता था।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

1006 ई० में महमूद ने मुल्तान पर अधिकार कर लिया। मुल्तान पर अधिकार से आनन्दपाल की स्थिति शोचनीय हो गयी। उसने पड़ोस के राज्य- अजमेर, दिल्ली, उज्जैन, ग्वालियर, कालिंजर और कन्नौज के शासकों को अपने पक्ष में मिलाकर तुर्कों की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के उद्देश्य से एक विशाल सेना एकत्र कर ली। आनन्दपाल और महमूद गजनवी के बीच 1009 ई० में वैहन्द के पास युद्ध हुआ। जिसमें महमूद गजनवी को विजय प्राप्त हुई।

~~वैहन्द~~ की सफलता के बाद- नगरकोट के किले पर आक्रमण किया। 1010 ई० में महमूद गजनवी ने मुल्तान पर आक्रमण किया और अधिकार कर लिया। 1014 ई० में त्रिलोचनपाल के साथ युद्ध करके नन्दन पर अधिकार कर लिया। 1015 से 1021 के बीच महमूद गजनवी ने कश्मीर पर आक्रमण किया परन्तु कश्मीर पर अधिकार नहीं हो पाया। 1018 ई० में गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण कर विजय प्राप्त करते हुए बुलन्दशहर पहुँचा। इसके बाद मथुरा पर आक्रमण किया। मथुरा के मन्दिरों में सोना चाँदी और हीरा-जवाहरातों से जड़ी हुई हजारों मूर्तियाँ थीं। महमूद ने मथुरा नगर को नष्ट कर दिया और लूट लिया तथा स्थापत्यकारों को गुलाम बनाकर गजनी भेज दिया। मथुरा के बाद वृन्दावन में भी संचित सम्पत्ति महमूद के हाथ लग गयी।

महमूद गजनवी ने 1021 ई० में चन्देलों की शक्ति को समाप्त करने के लिए भारत पर आक्रमण किया। 1022 में ग्वालियर के शासक कीर्तिराज को हराकर कालिंजर की तरफ बढ़ा, कालिंजर के साथ सन्धि कर स्वयं लौटकर गजनी लौट गया।